P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-1* September- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वैदिक साहित्य में निहित मानव कल्याण की भावना

The Spirit of Human Welfare Rooted in Vedic Literature

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 24/09/2021, Date of Publication: 25/09//2021

लक्ष्मण सिहं
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग,
डी.पी.बी.एस. पी.जी. कालेज अनूपशहर, बुलंदशहर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्राचीन ऋषि-महर्षियों द्वारा साक्षात्कृत, अर्जित एवं संकलित किये गये ज्ञान के भंडार को वेद कहते हैं। भारतीय मनीषियों के अनुसार वेद नित्य और अपौरुषेय हैं। वेद शब्द वैदिक ग्रन्थों में प्रतिपादित ज्ञान का वाचक होने के साथ ही सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का भी बोध कराता है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का विशाल भवन वैदिक साहित्य की आधारशिला पर ही आधारित है। ज्ञानार्जन और मानव कल्याण हेतु वेदाध्ययन का महत्त्व मानव जीवन में एकमत से स्वीकार किया गया है | वैदिक साहित्य समस्त मानवसमुदाय को धर्म, संप्रदाय, जाति और वर्ग विशेष के प्रति भेदभाव की भावनाओं से ऊपर उठाकर कल्याण, सुख, शांति और समृद्धि की प्राप्ति कराने में समर्थ है।

The Vedas of the Indian Indians are Nitya and Apaurusheya to be known as the source of science in ancient times by the ancient-great-great sages. Along with being the speaker of the knowledge propounded in the words of the Vedas, there is also a sense of complete speech. The huge building of Indian culture and civilization is based on the foundation stone of Vedic literature. The importance of the study of Vedas for the acquisition of knowledge and human welfare has been unanimously accepted in human life. Vedic literature is capable of helping the entire human community to attain welfare, happiness, peace and prosperity by raising the feelings of discrimination against a particular religion, sect, caste and class.

मुख्यशब्द: वैदिक साहित्य, वेद, उपवेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद।

Keywords: Vedic literature, Vedas, Upavedas, Brahmanas, Aranyakas, Upanishads.

प्रस्तावना

वेदों के नित्य और अपौरुषेय होने से भारतीय जनमानस में ईश्वरीय ज्ञान के रूप में वैदिक साहित्य में परम आस्था और दृढ विश्वास स्पष्ट रूप से देखा जाता है। संसार के उपलब्ध लिखित साहित्य में ऋग्वेद के प्राचीनतम होने के कारण संस्कृत भाषा को विश्व की प्राचीनतम भाषा और संस्कृत भाषा के साहित्य को विश्व का प्राचीनतम साहित्य कहते हैं। मैकडानल कहते हैं कि "प्राचीन भारतीय साहित्य का महत्त्व उसकी मौलिकता के कारण है" । भारतीय मनीषियों के अथक परिश्रम से उत्पन्न विभिन्न ज्ञान विज्ञान का भंडार संस्कृत साहित्य में ही निहित है। वेद शब्द वैदिक ग्रन्थों में प्रतिपादित ज्ञान का वाचक होने के साथ ही सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का भी बोधक है। आचार्य सायण तैत्तिरीय संहिता भाष्य की भूमिका में "इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः" अर्थात इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट के निवारण हेतु अलौकिक उपाय बतलाने वाले ग्रंथों को वेद कहते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने "विदन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति इति वेदः " कहते हुए ऋग्वेद-भाष्य-भूमिका में वेद शब्द की व्याख्या में लिखा है कि "जिनके द्वारा या जिनमें सारी सत्यविधाएं जानी जाती हैं, विधमान हैं या प्राप्त की जाती हैं, वे वेद हैं"। मनुस्मृति ने भी "वेदोऽखिलो धर्ममूलम् " के माध्यम से वेद को धर्म के मूल के रूप में अभिव्यक्त किया है।

वैदिक साहित्य

संस्कृत वाङ्मय उपलब्ध साहित्य की दृष्टि से विशाल है | प्रबुद्ध मनीषियों के द्वारा रचे गए अनेकों ग्रन्थ इसके अन्तर्गत समाविष्ट हैं। जिसे वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य इन दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है। वेद से सम्बंधित साहित्य वैदिक साहित्य कहलाता है। लोक से सम्बंधित साहित्य को लौकिक साहित्य कहते है। "ऋषयो: मन्त्रदृष्टारो न तु कर्तार:" अर्थात् ऋषियों ने परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त दिव्य दृष्टि से मन्त्रों को अनुभूत करके वेद और वैदिक साहित्य को श्रुति-परम्परा से ही सुरक्षित और संरक्षित किया था। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद तथा आरण्यक आदि आते हैं।

वेद चार हैं- [1] ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) अथर्ववेद । ऋग्वेदसंहिता में विभिन्न देवताओं की स्तुतियाँ हैं । 'इंद्र' आदि देवताओं के बड़े प्रभावशाली व्यक्तित्व का वर्णन हैं । ऋग्वेद के उपवेद का नाम 'आयुर्वेद' है जिसमें स्वस्थ रहने के उपाय, विभिन्न रोगों के नाम, रोगों के कारण, औषधियों तथा चिकित्सा का मुख्य रूप से वर्णन किया गया है । आचार्य सायण ने ऋग्वेद को **"यस्यां संहितायां स्तुतिपरकमन्त्राणां संग्रहः विद्यते सा ऋक्"** कहा है | यजुर्वेद को **"अनियताक्षरावसानं यजुः"** कहते हैं | यजुर्वेद संहिता में यज्ञ-विषयक मन्त्रों का संग्रह है । यज्ञ का संयोजन और संपादन करने वाले पुरोहित को अध्वर्यु कहा जाता है । यजुर्वेद के दो भेद हैं- कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद। **"विनियोग मिश्रत्वं कृष्णत्वम् , विनियोगामिश्रत्वं शुक्लत्वम्"** | शुक्ल यजुर्वेद में केवल मन्त्रों का संग्रह है और कृष्ण यजुर्वेद में छन्दोबद्ध मन्त्रों के साथ गद्यात्मक भाग भी है तथा मन्त्रों के विनियोग का भी संकलन किया गया है। यजुर्वेद के उपवेद का नाम **'धनुर्वेद'** है, जिसमें सेना, हथियार, युद्ध कला के विषय का वर्णन है ।सायण ने यजुर्वेद को **"यस्यां संहितायां यागपरकमन्त्राणां संग्रहः विद्यते सा यजुः"** कहा है |सामवेद संहिता में गायन परक मन्त्रों का संग्रह है। आचार्य सायण ने **"यस्यां संहितायां गानपरकमन्त्राणां संग्रहः विद्यते सा साम"** कहा है | यज्ञ के अवसर पर जिस देवता के लिए आहूति दी जाती है। उसे आहूत करने के लिए उद्गाता उस देवता की स्तुति में मंत्रों का उचित स्वर में गान करता है । इस गायन को साम कहते हैं। भारतीय संगीतशास्त्र का मूलस्रोत सामवेद ही है । सामवेद में कहा गया है कि- सप्त स्वराः त्रयो ग्रामाःमूर्च्छनास्त्वेकविंशतिः | ताना एकोनपञ्चाशत् इत्येतद् स्वरमण्डलम् || सामवेद संहिता के दो भाग हैं, आर्चिक और गान । सामवेद के उपवेद का नाम **'गन्धर्ववेद'** है, जिसमें गायन, वादन, नर्तन आदि विषयों का वर्णन किया गया है | गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी **"वेदानां सामवेदोऽस्मि"** कहा है। अथर्ववेदसंहिता में यज्ञ करने के लाभ का तथा यज्ञ से पर्यावरण की रक्षा का भी वर्णन है । इसमें समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, अन्धविश्वास, जादू-टोने, संमोहन, वशीकरण, ज्वर, पीलिया, सर्पदंश इत्यादि का एवं इनसे बचाव के उपायों का विस्तृत वर्णन है । **"यस्यां संहितायां विविध-कष्ट-निवारक-अभिचारपरकमन्त्राणां संग्रहः विद्यते सा अथर्व"** अथर्ववेद में **"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"** मन्त्रांश में भूमि को माता और स्वयं को भूमि का पुत्र बताया गया है । अथर्ववेद के उपवेद **'अर्थवेद'** में व्यापार और अर्थव्यवस्था आदि विषयों का वर्णन है ।महाभाष्य में महर्षि पतंजलि ऋग्वेद की इक्कीस ,यजुर्वेद की सौ ,सामवेद की एक हजार तथा अथर्ववेद की नौ शाखाओं उल्लेख करते हुए कहते हैं कि –एकविंशतिधा बाहवृच्यं एकशतमध्वर्यु शाखा |सहस्रवर्त्मा सामवेदो नवधाऽथर्वणोऽपि8|| यद्यपि **'मन्त्रब्राह्मणयोः वेदनामधेयम्'** के अनुसार ब्राह्मण वेद का ही भाग है । तथापि संहिता भाग के अनन्तर वैदिक साहित्य का विस्तार ब्राह्मण-ग्रन्थों के रूप में हुआ । मंत्रों की व्याख्या, विनियोग, विवरण और रहस्य को प्रकट करने वाले ग्रंथों को ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं । ब्राह्मण-ग्रन्थों में यज्ञों का आध्यात्मिक, आधिदैविक और वैज्ञानिक महत्त्व प्रस्तुत किया गया है। भट्ट भास्कर ने कर्मकांड तथा मंत्रों की व्याख्या करने वाले ग्रंथों को ब्राह्मण ग्रन्थ कहा है। ऋग्वेद पर दो ब्राह्मण ग्रन्थ प्राप्त होते हैं –[1] ऐतरेय ब्राह्मण [2] शांखायन ब्राह्मण | ऐतरेय ब्राह्मण में सोमयाग , अग्निष्टोम, अग्निहोत्र तथा राज्यभिषेक इत्यादि का विस्तृत वर्णन है। ऐतरेय ब्राह्मण में ही प्रसिद्ध शुनःशेप आख्यान है जिसमें हरिश्चन्द्र पुत्र रोहित के लिये देवराज इन्द्र द्वारा **"चरैवेति चरैवेति "** का प्रसिद्ध संदेश दिया गया है । शांखायन ब्राह्मण का प्रधान विषय सोमयाग है एवं इसमें अग्न्याधान,दर्श पौर्णमास और चातुर्मास्य इष्टियो का वर्णन है । यजुर्वेद के प्रसिद्ध शतपथ ब्राह्मण में यज्ञों के विस्तृत वर्णन के साथ अनेक प्राचीन आख्यानों का वर्णन है | इसमें पुरूरवा और उर्वशी की प्रेम-कथा और च्यवन ऋषि आख्यान इत्यादि का वर्णन है। तैत्तिरीय, छान्दोग्य, तवलकार ,आर्षेय और गोपथ इत्यादि अन्य प्रसिद्द ब्राह्मण ग्रन्थ हैं | संहिता भाग के अनन्तर वैदिक साहित्य का विस्तार ब्राह्मण-ग्रन्थों और ब्राह्मण-ग्रन्थों के के बाद आरण्यक ग्रन्थों के रूप में हुआ है | आचार्य सायण आरण्यक ग्रन्थों के विषय में **"अरण्याध्ययनादेतद आरण्यकमितीर्यते"** ।**"अरण्येतदाधीयीतेत्येवं वाक्यं प्रवक्ष्यते"** ॥ अर्थात् जिन ग्रंथों का अध्ययन-अध्यापन गाँवों से दूर अरण्यों में होता है,उन्हें आरण्यक कहते हैं । वानप्रस्थ आश्रम में आत्म-विद्या, यज्ञ के रहस्यों और दार्शनिक तत्त्वों का विवेचन करने वाले आरण्यक ग्रन्थों का अध्ययन किया जाता है । जिन तत्वों का विस्तृत वर्णन हमें उपनिषदों में प्राप्त होता है उनका प्रारंभ इन्हीं आरण्यकों से हुआ। **"उप ब्रह्म सामीप्यं निश्चयेन सीदति प्राप्नोति यया सा उपनिषद्"** ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हेतु गुरु के सानिध्य में श्रद्धापूर्वक बैठकर उपनिषदों का अध्ययन-अध्यापन किया जाता है। शंकराचार्य ने अविद्या नाश ,दुःख निरोध और ब्रह्मप्राप्ति इन तीनों अर्थों को लेकर उपनिषद को ब्रह्मा विद्या का द्योतक माना है। वैदिक साहित्य में सबसे अर्वाचीन होने के कारण उपनिषदों को 'वेदान्त' भी कहते हैं। भारतीय ऋषियों ने गम्भीरतम चिन्तन से जिस जीव और ब्रह्म की एकता का साक्षात्कार किया, उपनिषद उन ऋषियों के अनुभवों की अमूल्य निधि

हैं। उपनिषदों में ही **"प्रज्ञानं ब्रह्म"** , **"सर्वं खल्विदं ब्रह्म"** और **"तत्त्वमसि"**जैसे उदात्त और गम्भीर चिन्तन प्राप्त होते हैं | चारों वेदों से सम्बद्ध 108 उपनिषद् गिनाये गए हैं, किन्तु 10 उपनिषदों की प्रसिद्धि के सम्बन्ध में मुक्तिकोपनिषद् का यह श्लोक विख्यात है- ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरिः ।ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा । वेदाध्ययन में सहायक वेदांगो के द्वारा वेद मंत्रों के गंभीर व सूक्ष्म अर्थों की और मंत्रों के विनियोग की जानकारी होती है । ऋषियों ने ६ वेदांगो की रचना की। पाणिनीय शिक्षा में महर्षि पाणिनि वेदपुरुष की कल्पना करते हुए इन वेदांगों में से छन्द को पैर, कल्प को हाथ, शिक्षा को नासिका, ज्योतिष को नेत्र, निरुक्त को श्रोत्र, तथा व्याकरण को वेदपुरुष का मुख कहते हैं ।

"छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते" ॥
"शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते" । ।

जिन ग्रंथों की सहायता से वेद-मन्त्रों के उच्चारण का शुद्ध ज्ञान होता है, उन ग्रन्थों को शिक्षा कहते हैं। वैदिक मन्त्र छन्दोवद्ध हैं। छन्दों का ठीक ज्ञान प्राप्त किये बिना वेद- मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण नहीं हो सकता है। व्याकरण का उद्देश्य शब्द की प्रकृति का ज्ञान कराना है।यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् | स्वजनो श्वजनो मा भूत् सकलो शकलः सकृच्छकृत् ||" के रूप में अधिक अध्ययन न पर भी व्याकरण अध्ययन की आवश्यकता प्रथित है | व्याकरण का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ महर्षि पाणिनि विरचित अष्टाध्यायी है। यास्काचार्य कृत निरुक्त में वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति दिखाई गई है। निरुक्त शब्दों के अर्थ का ज्ञान कराता है। यज्ञ उचित काल और मुहूर्त में किये जाने से ही फलदायक होते हैं। अतः काल-ज्ञान के लिए ज्योतिष शास्त्र की भी वेद अंग के रूप में प्रसिद्धि हुई। कल्प के चार भेद होते हैं। (1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र और (4) शुल्ब सूत्र। श्रौत का अर्थ है श्रुति (वेद) से सम्बद्ध यज्ञ। अतः श्रौत सूत्रों में तीन प्रकार की अग्नियों के आधान अग्निहोत्र, दर्श पौर्णमास, चातुर्मास्यादि साधारण यज्ञों तथा अग्निष्टोम आदि सोमयागों का वर्णन है। ये वैदिक यज्ञ-पद्धति पर प्रकाश डालते हैं। गृह्यसूत्रों में जन्म से मृत्युपर्यन्त किये जाने वाले संस्कारों का वर्णन है, जिनका अनुष्ठान प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक समझा जाता है। धर्मसूत्रों में वर्णाश्रम-धर्म की विवेचना करते हुए ब्रह्मचारी, गृहस्थ व राजा के कर्त्तव्यों विशेष वर्णन किया गया है। शुल्ब का अर्थ है मापने का सूत्र। शुल्ब सूत्रों में यज्ञ-वेदियों का परिमाण, तथा उनके निर्माण का विस्तृत वर्णन है। शुल्बसूत्र में भारतीय रेखागणित के प्रथम दर्शन होते हैं। इस प्रकार वैदिक साहित्य संहिता भाग से शुरु होकर अष्ट विकृतियों द्वारा श्रुति परम्परा और अनन्तर लिखित रूप में सुरक्षित होकर आगे ब्राहमण ,आरण्यक और उपनिषद् ग्रन्थों के रूप में विशाल वटवृक्ष के समान है |

वैदिक साहित्य में मानव कल्याण की भावना

भारतीय जनमानस में ईश्वरीय ज्ञान के रूप में वैदिक साहित्य में परम आस्था स्पष्ट रूप से देखी जाती है । जो वेद की प्रामाणिकता में श्रद्धा और विश्वास रखता है वह आस्तिक होता है, और जो वेद की निन्दा करता है, वेद की प्रामाणिकता में अश्रद्धा और अविश्वास रखता है वह नास्तिक होता है । वैदिक साहित्य में मानव कल्याण की भावना के पग पग पर हमें दर्शन होते हैं | जैसे - संहिताओं में मानव का उपकार करने वाले प्राकृतिक तत्वों का वर्णन देवों के रूप में किया गया है | देवों की देवत्व शक्ति के आधार पर उनका नामकरण किया जाता है |निरुक्तकार यास्क ने "तिस्रःएव देवताः" कहकर अन्तरिक्षस्थानीय ,पृथ्वीस्थानीय और द्युस्थानीय रूप में देवों का वर्णन किया है | अग्निदेव मनुष्यों द्वारा किये जाते हुए देवयज्ञ में प्रदत्त आहुतियों को ग्रहण करके यथापूर्व निर्धारण के अनुसार भाग को देवों तक पहुंचाकर मनुष्यों के धार्मिक कार्यों को संपन्न कराता है | अपनी नेतृत्व शक्ति द्वारा ,यज्ञ की आहूति ग्रहण करके ,अपने तेज द्वारा एवं प्रकाश का अधिष्ठान करके अग्निदेव मानव समाज का कल्याण करता है | ऐसे ही सवितृदेव यजमानों की रक्षा हेतु राक्षसों का संहार करके मानव समाज के अनिष्ट का निवारण करते हैं तो उपेन्द्र विष्णुदेव परमपद के अधिष्ठाता और देवों मंत सर्वाधिक सक्रिय और व्यापनशील होकर मानव कल्याण करते हैं | ऋग्वेद में सर्वाधिक वर्णित देव इन्द्र अपनी महान कार्यों को करने की शक्ति ,अतुलनीय पराक्रम और युद्धों में असुरविजय रूप अपने कार्यों द्वारा बल एवं दीप्ति से युक्त कार्यों को करने के लिये मानव समाज को प्रेरणा प्रदान करते हैं | रूद्र ,बृहस्पति ,वरूण और सोम इत्यादि अन्य देव भी अपने गुणों और कार्यों से मानव कल्याण में तत्पर रहते हैं | ऋग्वेद का अग्निसूक्त जहां अग्निदेव के गुणों का वर्णन करते हुए उसके सूपायन होने की कहता है तो संज्ञान सूक्त संगच्छध्वं संवदध्वं सर्वे मनांसि जानतां कहता है | जहां ऋषि **"स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्यचन्द्रमसाविव पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि"** कहकर सूर्य और चन्द्रमा के समान सन्मार्ग पर चलने की प्रार्थना कर्ता है तो वहीं **"विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव | यद्भद्रं तन्नासुव"||** के माध्यम से श्रेष्ठ और कल्याणकारी कार्यों को करने की शक्ति प्रदान

करने की प्रार्थना करते हैं | अथर्ववेदीय ब्रह्मचर्य सूक्त में अमरत्व लाभ के रूप में ब्रह्मचर्य की महत्ता प्रतिपादित की गई है | ब्राह्मण ग्रंथों में गुरु, शिष्य, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, माता-पिता, समाज और व्यक्ति, राष्ट्र और राष्ट्रीयता के बीच परस्पर व्यवहार के सम्बन्ध में और विश्व-बंधुत्व, परोपकार, दान, दया, अतिथि-सत्कार आदि विश्व कल्याण से ओतप्रोत श्रेष्ठ भावनाओं का विस्तृत रूप से वर्णन मिलता है। तो समस्त आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारों की उत्पत्ति के लिए प्रारंभिक और मुख्य स्रोत उपनिषद ग्रन्थ माने जाते हैं । ईशोपनिषद **"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् |तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्"||** ईश्वर द्वारा रचित इस चराचर जगत में त्याग पूर्वक भौतिक संसाधनों के उपभोग की कहता है तो **"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः"** कहकर कर्म करते हुए सौ वर्ष तक आरोग्य युक्त जीवन के लिये कहता है | कठोपनिषद **"सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै"** कहकर गुरु शिष्य के साथ-साथ उत्थान की प्रार्थना करता है तो वहीं **"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"** कहकर मनुष्य को उन्नति हेतु सज्जनों का संसर्ग एवं आलस्य रहित होकर जागरूक होने की प्रेरणा देता है | कठोपनिषद में ही ऋषि **"न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः|तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति"||** कहकर उस अलौकिक अद्वितीय दिव्य और सबकी मूल शक्ति परमपिता परमात्मा की सर्व शक्तिमत्ता का उपदेश मानव समाज के लिये करते हैं | हमें वैदिक साहित्य में व्यक्तित्व निर्माण की योजना के रूप में गर्भाधान,पुंसवन,सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण ,अन्नप्राशन ,चूडाकर्म, कर्णवेध , विद्यारम्भ , उपनयन , वेदारम्भ , केशान्त , समावर्तन ,विवाह और अन्त्येष्टि ये सोलह संस्कारप्राप्त होते हैं | मानवजीवन के लक्ष्य के रूप में धर्म ,अर्थ ,काम और मोक्ष ये पुरुषार्थचतुष्टय तथा लक्ष्य प्राप्ति के सोपान के रूप में ब्रह्मचर्य , ग्रहस्थ , वानप्रस्थ और संन्यास इन चार आश्रमों से युक्त वर्णाश्रम-व्यवस्था प्राप्त होते हैं | नित्य प्रतिदिन जाने अनजाने में होने वाले पापों के क्षरण में सहायक ब्रह्मयज्ञ ,देवयज्ञ , बलिवैष्व देव यज्ञ ,पितृयज्ञ और अतिथियज्ञ ये पञ्च महायज्ञ , विभिन्न निमित्तों से किये जाने वाले अन्य सभी मुख्य धार्मिक सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष और हृदयवगाही रूप मिलता है | वैदिक साहित्य भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति का मूल आधार है। महाकाव्य, नाटक, गद्य, कथा, गीतिकाव्य आदि साहित्यिक विधाओं का उदगम स्थल वेद ही है। वेद और वेद से सम्बंधित साहित्य में इतिहास, भूगोल, सामाजिकविज्ञान, नीतिशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, गणितशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, खगोलशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, विमानशास्त्र, रसायनशास्त्र और भौतिकशास्त्र इत्यादि मानव जीवनोपयोगी ज्ञान का समृद्ध भंडार निहित है। वेद मानवसमुदाय के कर्त्तव्यों का बोध कराने के लिए सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ है। किसे क्या करना चाहिए क्या नहीं चाहिए इन सबका वैदिक साहित्य में विस्तृत वर्णन किया गया है | "ब्राह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करमष्यजुः"अर्थात ब्राह्मण का कर्त्तव्य अध्ययन-अध्यापन,यजन-याजन ,क्षत्रिय का कार्य रक्षा करना ,वैश्य का कार्य धनोपार्जन एवं उसका सदुपयोग करना, शूद्र का कार्य सेवा करना है । व्यापार में वस्तु-विनिमय अर्थात वस्तुओं का आदान-प्रदान करने के तरीके पर प्रकाश डालता हुआ यजुर्वेद का यह मन्त्र है "देहि में ददामि ते निधेहि मे निदधे ते । निहारं च हरामि मे निहारं निहराणि"॥ प्रजा के परम कर्तव्य राष्ट्र की रक्षा करने का सन्देश **"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः स्याम"** के रूप में स्पष्ट रूप में मिलता है। यजुर्वेद में सभा और समिति की उपयोगिता बतलाते हुए कहा गया है कि **"सभा च मां समितिश्चावता प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने"** । एक सहृदयी अध्येता को प्राचीन भारत के समाज, सभ्यता और संस्कृति की जानकारी के लिए,व्यवसाय, उद्योग-धंधों, वाणिज्य, शिल्प आदि की जानकारी के लिए राजा, राज्य, सभा, समिति, शासन-प्रणाली, शासन के सिद्धान्त आदि की जानकारी के लिए, भारतीय इतिहास और भौगोलिक जानकारी के लिए वैदिक साहित्य का अध्ययन और परिशीलन आवश्यक है | ज्ञानार्जन के लिए वेदाध्ययन की आवश्यकता सभी विद्वानों द्वारा स्वीकार की गई है सार्थक वेदाध्ययन के लिए विभिन्न वेदांगो की,यज्ञों के संपादन के लिए ब्राह्मण ग्रंथों की,एकांत में बैठकर गहन चिंतन हेतु आरण्यक ग्रंथों की ,और आत्म-विद्या,प्राण-तत्व इत्यादि गहन विषयों के साथ साथ मानव कल्याण के विभिन्न उपायों की जानकारी हेतु उपनिषद ग्रंथों की उपयोगिता मानव जीवन में है।

अध्ययन का उद्देश्य

वैदिक साहित्य में निहित विभिन्न मानव कल्याण की भावनाओं को जनसामान्य के सामने प्रस्तुत करके उनके हृदय में संस्कृत जानने और सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न करना इस शोधपत्र का विशिष्ट उद्देश्य है।

साहित्यावलोकन

वैदिक साहित्य समस्त मानवजाति को धर्म, संप्रदाय, जाति और वर्ग विशेष के प्रति भेदभाव की भावनाओं से ऊपर उठकर कल्याण, सुख, शांति और समृद्धि की कामना से युक्त करके उत्थान के मार्ग पर ले जाने में सहायक है ।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्राचीन ऋषियों द्वारा परम पिता परमात्मा के अनुग्रह से अर्जित समस्त ज्ञान को वेद' कहते हैं। वेद शब्द वैदिक ग्रन्थों में प्रतिपादित ज्ञान का वाचक होने के साथ ही सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का भी बोधक है। अधिकांश भारतीय विद्वानों के अनुसार वेद नित्य और अपौरुषेय हैं । जिनका संकलन महर्षि वेदव्यास द्वारा किया गया |मैकडानल के अनुसार- "मानव जाति के विकास के अध्ययन का मूल स्रोत होने के कारण भारतीय वाङ्मय ग्रीक साहित्य की अपेक्षा कहीं अधिक उत्कृष्ट है ।" वैज्ञानिक दृष्टि से यदि वेदों का अध्ययन किया जाये तो वेद मन्त्रों में अनेक वैज्ञानिक सिद्धान्तों के संकेत स्पष्ट रूप से प्राप्त होते हैं। हमें वैदिक साहित्य में व्यक्तित्व निर्माण की योजना के रूप में गर्भाधान इत्यादि सोलह संस्कारप्राप्त होते हैं | मानवजीवन के लक्ष्य के रूप में धर्म ,अर्थ ,काम और मोक्ष ये पुरुषार्थचतुष्टय तथा लक्ष्य प्राप्ति के सोपान के रूप में ब्रह्मचर्य , ग्रहस्थ , वानप्रस्थ और संन्यास इन चार आश्रमों से युक्त वर्णाश्रम-व्यवस्था प्राप्त होती है | नित्य प्रतिदिन जाने अनजाने में होने वाले पापों के क्षरण में सहायक ब्रह्मयज्ञ ,देवयज्ञ , बलिवैष्वदेव यज्ञ ,पितृयज्ञ और अतिथियज्ञ ये पञ्च महायज्ञ , विभिन्न निमित्तों से किये जाने वाले अन्य सभी मुख्य धार्मिक सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष और हृदयवगाही रूप मिलता है | महाकाव्य, नाटक, गध, कथा, गीतिकाव्य आदि साहित्यिक विधाओं की उत्पत्ति का स्रोत वेद से ही है। वेद और वेद से सम्बंधित साहित्य में मानव जीवनोपयोगी ज्ञान का समृद्ध भंडार निहित है। इसीलिए ज्ञानार्जन और मानव कल्याण के लिए वेदाध्ययन की आवश्यकता सभी विद्वानों द्वारा स्वीकार की गई है, इस प्रकार समग्र वैदिक साहित्य का सम्यक अवलोकन करके हम कह सकते हैं कि वैदिक साहित्य समस्त मानवजाति को धर्म, संप्रदाय, जाति और वर्ग विशेष के प्रति भेदभाव की भावनाओं से ऊपर उठकर कल्याण, सुख, शांति और समृद्धि की कामना से युक्त करके उत्थान के मार्ग पर ले जाने में सहायक है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डा. कपिलदेव द्विवेदी -संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास रामनारायणलाल विजय कुमार इलाहाबाद*
2. *ए.बी.कीथ- संस्कृत साहित्य का इतिहास*
3. *ओमप्रकाश पाण्डेय -संस्कृत साहित्य का बृहद इतिहास ,उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ*
4. *डा.राधावल्लभ त्रिपाठी - संस्कृत साहित्य का इतिहास ,विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी*
5. *डा. वाचस्पति गैरोला - संस्कृत साहित्य का इतिहास ,चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन वाराणसी*
6. *डा. बाबूराम त्रिपाठी - संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास,विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा*
7. *आचार्य बलदेव उपाध्याय-संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ*
8. *"संग्रहीत प्रति". वाईवेस पॅनोरामा. ०७ अक्तूबर २०१५. मूल से 6 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २५-०६-२०१७*
9. *"पाठ-1 वेद का परिचय एवं महत्त्व". स्कूल ऑफ़ ओपन लर्निंग. दिल्ली विश्वविद्यालय. अभिगमन तिथि २५-०६-२०१७.*
10. *"पाठ-4 वेदांग-साहित्य". स्कूल ऑफ़ ओपन लर्निंग. दिल्ली विश्वविद्यालय. मूल से 15 मई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २५ जून, २०१७.*